समकालीन कहानी में नारी विमर्श:

प्रस्तावना:

हिंदी साहित्य में पिछले कुछ वर्षों से नारी विमर्श की चर्चा होती रही है और यह उपन्यासों और कहानियों के संदर्भ में अधिक देखी और दिखाई जा रही है। विमर्श किसी भी विषय पर हो, वह बुरा नहीं होता क्योंकि साहित्य का उद्देश्य मात्र मनोरंजन करना ही नहीं अपितु अनेक प्रासंगिक विषयों पर चर्चा, चिंतन और मनन करना भी होता है। साहित्य लिखना और पढ़ना केवल दिमागी अय्याशी नहीं है बल्कि समाज में और हमारे आसपास हो रहे एक - एक घटनाओं का विवरण है। यदि साहित्य के सामाजिक मनोवैज्ञानिक,सांस्कृतिक, राजनीतिक इत्यादि के अंतर्गत व्याप्त समस्याओं को समझेंगे नहीं उन पर सोच विचार नहीं करेंगे तो उस विषय या साहित्य पर कोई विमर्श करना असंभव है। साहित्य को पढ़ने और लिखने के बाद उस पर किए गए सोच- विचार को ही आज- कल विमर्श के नाम से जाना जाता है। लेकिन इस बात से मुंह नहीं मोड़ा जा सकता कि विचार-विमर्श ही साहित्य की जरूरी आवश्यकता है।

नारी विमर्श और रचनाकार:

अब प्रश्न यह है कि नारी विमर्श क्या है? तो इसका उत्तर यह है कि नारी द्वारा किया गया नारी विषयक विमर्श। दूसरा उत्तर यह भी हो सकता है कि नारी के विषय में लेखकों और लेखिकाओं का विमर्श।किंतु अक्सर यह देखते हैं नारी विमर्श लेखिकाओं से ही जोड़ा जाता है जो एक संकीर्ण दृष्टिकोण है। अब नारी विमर्श की बात करें तो नारी के रूप चित्रण मात्र अथवा नारी के मनोविकारों,हाव-भावों आदि का चित्रण अथवा नारी की अतृप्त कामनाओं का चित्रण ही मात्र नारी विमर्श है,तो यह तो साहित्य के आदिकाल से होता आ रहा है और रीतिकालीन साहित्य इसके लिए बदनाम है। बहुत से गंभीर आलोचक और साहित्य चिंतक ऐसे नारी विमर्शों को विमर्श नहीं मानते जो उचित ही है। तो नारी विमर्श का तात्पर्य क्या है? पहले जो साहित्य लिखा गया उसमें नारी विमर्श शायद ही नारी की समस्याओं से जुड़ा हो किंतु अधिकांश विमर्श तो रचनाकारों के नायिका के रूप व सौंदर्य वर्णन में ही किया गया। आधुनिक काल में भारतेंदु हरिश्चंद्र ने ब्रज और खड़ी बोली में जो साहित्य लिखा उसमें भक्ति, देशप्रेम, समाजसुधार के साथ-साथ नारी विमर्श भी है। महावीर प्रसाद द्विवेदी के युग में मैथिलीशरण गुप्त, हरिऔध आदि रचनाकारों ने नारी की समस्याओं पर अधिक विचार विमर्श किया है। गुप्तजी ने ' साकेत ' महाकाव्य में उर्मिला की जो पीड़ा व्यंजित की अथवा हरिऔध ने अपने महाकाव्य ' वैदेही वनवास' में सीता आदि नारी पात्रों की मनोदशा का जो मार्मिक वर्णन किया है वह नारी विमर्श नहीं तो क्या है? इसी प्रकार बंग महिला की कहानियों में नारी विमर्श, प्रेमचंद के अनेक कहानियों में नारी समस्या व उपन्यासों में नारी

जीवन का चित्रण,भगवती चरण के उपन्यास ' रेखाचित्र' व यशपाल के उपन्यास ' दिव्या ' जैनेंद्र के उपन्यास ' त्यागपत्र ' आदि में नारी विमर्श की चर्चा की गई है।

ऐसा क्यों माना जाता है कि स्त्रियों द्वारा लिखित साहित्य में ही स्त्री विमर्श हुआ है और पुरुष लेखकों द्वारा लिखित साहित्य नारी विमर्श से क्या शून्य है? असल में बीसवीं शती में अनेक लेखिकाएं उभरी हैं और उन्हें पर्याप्त प्रसिद्धि मिली है तब से नारी विमर्श की अधिक चर्चा होने लगी है। आजकल अनेक लेखिका हैं जो कहानी और उपन्यास लिख रही हैं और उनकी रचनाओं में नारी विषयक समस्याओं का खुला चित्रण हो रहा है। नारी की समस्याओं पर पुरुष लेखकों ने भी लिखा है और अब भी लिख रहे हैं और प्रामाणिक ढंग से लिख रहे हैं पर लेखिकाएं समझती हैं कि नारी ही नारी की समस्याओं को समझ सकती हैं।

नारी को जगत जननी कहा जाता है। समाज में गार्गी, विद्योत्तमा, सावित्री, सती आदि नारियों का नाम सम्मान और आदर के साथ लिया जाता है क्योंकि उन्होंने समाज में अपना स्थान स्वयं बनाया था। लेकिन आज आधुनिकीकरण में भी नारी को विभिन्न आंदोलनों के माध्यम से अपनी स्वतंत्रता और स्थान को प्राप्त करने की कोशिश करनी पड़ रही है आज भी समाज में इतने शिक्षित होने के बावजूद महिलाओं के प्रति हिंसा एवं शोषण दिनों दिन बढ़ रहे हैं। आज भी विधवापन,वेश्यावृत्ति, दहेज प्रथा, भ्रूण हत्या, यौन उत्पीड़न, तलाक, परित्याग, हत्या आदि स्वरूप एवं माध्यमों के जरिए महिला हत्या एवं उत्पीड़न की समस्याओं में वृद्धि तो हो रही है किंतु सुधार कम। यह सब रोकने के लिए और नारी स्वचेतना को जागृत करने के लिए नारी विमर्श पर समकालीन महिला लेखिकाओं ने साहित्य में नारी विमर्श को विशेष स्थान दिया है। सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित ' झांसी की रानी' नारी शक्ति का वास्तविक व यथार्थ चित्रण है। इसी प्रकार ' बिखरे मोती', ' उन्मादिनी ' ,' सीधे-साधे चित्र' आदि इन कहानियों द्वारा नारी की आसूं से भीगी मूर्ति को तोड़कर लेखिका ने उसके संघर्षरत जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत किया है।

हिंदी साहित्य जगत में उषा देवी मित्रा जी ने भी स्त्री जीवन की अनेक समस्याओं को अपने उपन्यास के माध्यम से समाज में उसकी वास्तविकता को लाया है। मित्रा जी ने ' वचन का मोल, ' पिया', ' जीवन की मुस्कान' ,' आवाज', ' नष्ट नीड' आदि उपन्यास में उपेक्षिता नारी की व्यथा तथा नारी के स्वतंत्र अस्तित्व पर बल दिया जिसका चित्रण उन्होंने इन उपन्यासों में किया है।

हिंदी साहित्य में नारी विमर्श की मजबूत नींव महादेवी प्रसाद वर्मा जी ने डाली। गद्य और पद्य दोनों ही में उन्होंने अनेक रचनाएं लिखीं। इनकी रचनाओं में नारी अवधारणाएं समाहित हैं। 'श्रृंखला की कड़िया' में भारतीय नारी के अभिशापों की करुण पुकार है। इसमें नारी मुक्ति के उपायों की ओर गहन चिंतन और विद्रोही तेवर है।

इसी प्रकार उषा प्रियंवदा जी के उपन्यासों में नारियों की मानसिक यंत्रणा और मुक्त खोज को लेखिका ने नए तरीके से प्रस्तुत किया है। इनके उपन्यास पचपन खंभे लाल दीवारें तथा

रुकोगी नहीं राधिका इत्यादि नारी विमर्श पर आधारित हैं। इसी प्रकार मन्नू भंडारी जी ने नारी विचार- विमर्श पर अनेक कहानियों का सृजन किया जिसमें ' यही सच है', ' सजा', ' मैं हार गई', ' सयानी बुआ' आदि नारी के यथार्थ का चित्रण है। इसी तरह कृष्णा सोबती द्वारा रचित लघु उपन्यास ' मित्रो मरजानी' जिसमें हिंदी में पहली बार ऐसी नारी पात्र की सृष्टि हुई जिसमें अपनी शारीरिक भूख की मांग की साहसिकता है। कृष्णा सोबती जी द्वारा रचित ' सूरजमुखी अंधेरे के ' में बचपन से बलात्कृत एक युवती की मानसिकता का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण है।

ममता कालिया ने समकालीन कहानियों में नारी विमर्श में जो उपन्यास लिखा है, वह अद्‌भुत है। 'बेघर' और 'नरक दर नरक', आलोच्य समय पर लिखित उनके उपन्यास हैं जिसमें नारी संबंधित पुरुषों की परंपरागत दकियानूसी धारणाओं को विध्वंस करने का सफल प्रयास है। इस प्रकार अनेक महिला लेखिकाओं ने नारी विमर्श पर बहुत कुछ लिखा है। जिसमें मृदुला गर्ग, सूर्यबाला, नासिरा शर्मा, प्रभा खेतान, और चित्रा मुद्गल समकालीन कहानियों में नारी विमर्श पर अनेक कहानियां और उपन्यासों की रचना कर समाज में बदलाव लाने का प्रयास किया है।

समकालीन कहानी में नारी विमर्श के उदाहरण:

ममता कालिया द्वारा अनेक कहानियों और उपन्यासों में नारी जीवन के विभिन्न आयामों की गतिविधियों का स्वरूप देखने को मिलता है। किशोर लड़कियां, युवतियां, अधेड़ उम्र की नारियां सब अपने असली परिवेश में इनकी कहानियों में प्रकट हैं। वे अपनी कहानियों में रोजमर्रा के संघर्ष में युद्ध रत स्त्री का व्यक्तित्व बड़ी संवेदना से उभारती हैं। नारी के उत्पीड़न तक ममता जी की प्रतिभा सीमित नहीं है उन्होंने यह भी सिद्ध किया है कि नारी मुक्ति के रास्ते में सबसे बड़ी बाधा नारी के अपने घर वाले ही उपस्थित करते हैं ।जिसका उत्तम उदाहरण इन की कहानी ' लड़कियां' है।"यह लड़की मेरी जान लेकर जाएगी। इससे तो पैदा होते ही मर जाती, आज यह धक्का - फजीहत तो ना होती।"(लड़कियां कहानी - पृष्ठ -४९) सुधा ने सारी घटना बताने की कोशिश की लेकिन उसे महसूस हुआ उसके सामने तीन बहरे बैठे हैं।

यहां सुधा द्वारा एक ऐसी लड़की का जिक्र किया गया है जो अपने ही घर वालों से अपने लिए संघर्ष करती है। जो एक ऐसी गलती का शिकार हो जाती है जो उसने किया ही नहीं किंतु फिर भी परिवार वाले बिना बात की जांच- पड़ताल किए उसके भविष्य के सही गलत का निश्चय कर लेते हैं।

इसी प्रकार मृदुला गर्ग की कहानियों में पुरुष निरपेक्ष नारी मानसिकता,बलात्कार का मनोवैज्ञानिक प्रभाव, नारी संबंधित प्रेम और विवाह यौन- जीवन की विसंगतियों का, प्रवासी भारतीयों की मनोवृत्तियों आदि अनेक नारी विमर्शों को केंद्र में रखकर इन्होंने कई कहानियां लिखी हैं। इनकी कहानियों में स्वतंत्र, स्वाभिमानी व आत्मनिर्भर नारी का स्वरूप देखने को मिलता है। इसका एक उदाहरण ' हरी बिंदी' है जिसमें नारी स्वतंत्रता,स्वाभिमान व

आत्मनिर्भरता का चित्रण बखूबी दिखाई देता है।इस कहानी का भावार्थ ही कहानी को संपूर्ण रूप से सब कुछ समझा देता है। जो इस प्रकार है -"आर्थिक स्वतंत्रता के बावजूद विशेष रूप से विवाह के बाद श्री की निजी स्वतंत्रता परिदृश्य को मृदुला गर्ग की कहानी ' हरी बिंदी' बहुत सहजता से सामने लाती है।"पहनने-ओढ़ने, मिलने- जुलने यहां तक कि खाने-पीने के आचार- व्यवहार पर पति का अंकुश जिस तरह स्त्री की निजता को नकारता है वही इस कहानी का अभीष्ट है। नीले सूट पर हरी बिंदी फैशन के एक बंधे- बंधाए नियम के विपरीत है वैसे ही जैसे दांपत्य में पति की इच्छा ही अंतिम है यह एक बंधा - बंधाया नियम है। इस कहानी की नायिका अपने पति की अनुपस्थिति का एक दिन जिस स्वातंत्र्य की अनुभूति के साथ बिताती है, वह कहानी को एक संदेश की तरह उभारती है। नीले सूट पर हरी बिंदी उस अवहेलना का प्रतीक है जो वह उस बंधन के विरुद्ध व्यक्त करना चाहती है।"

इसी प्रकार चित्रा मुद्गल की कहानियों में एक ओर नौकरी पेशा नारियों का संघर्षरत जीवन अंकित है। तो दूसरी ओर झोपड़- पट्टीयों में जीवन बिताने वाली अभाव ग्रस्त नारियों की व्यथा का। इनकी कहानियों में नारी अपने अस्तित्व एवं अस्मिता के लिए लड़ाई लड़ती हुई सर्वत्र कहानियों में मिलेगी। चित्रा जी के नारी विमर्श में नारीवाद की चिंगारियां नहीं बल्कि स्त्री- पुरुष संभावना के जरिए नारी- मुक्ति एवं नारी-उत्थान की चाह है लेकिन नारी-उत्पीड़न के प्रति विरोध उनकी रचना में प्रखर है। ' लक्षागृह' कहानी नारी विमर्श का उत्तम उदाहरण है-

'लक्षागृह' कहानी एक पढ़ी-लिखी कामकाजी स्त्री के इस संघर्ष में उसके अंतर संसार को सामने लाती है जहां उसकी निजता और उसका आत्म स्वाभिमान कदम-कदम पर तिरस्कृत है। कहानी की नायिका एक सुंदर स्त्री नहीं है और इसी कारण उसका विवाह अभी ठीक समय पर नहीं हो पाया। अंततः उस स्त्री के दफ्तर का एक व्यक्ति उससे विवाह करने को तैयार होता है लेकिन बाद में पता चलता है स्त्री का सहकर्मी एक आर्थिक समझौते के तहत उस असुंदर स्त्री से शादी करने को तैयार है। जिसका उदाहरण इस प्रकार है -"छोड़ यार! काली वाली ही सही! घर की हालत तुझ से छिपी नहीं।"

"सोच, आठ सौ महीने कमाने वाली कहां मिलेगी?सौदे की कोई शक्ल सूरत नहीं होती। मैं जीवन और व्यावहारिकता को एक दूसरे का पूरक मानता हूं। नहीं तो देखने में ठीक ठाक आशा घर चलाने में अधिक सही लड़की है।"

इस प्रसंग को जानने के बाद सुनीता जैसी आत्म स्वाभिमानी स्त्री इस समझौते को नकार कर उस आत्म स्वाभिमानी किंतु अपंग लड़के से जिसे उसके पिता द्वारा चयन किया गया था, उससे विवाह करने को तैयार हो जाती है। श्री के आत्म स्वाभिमान तथा निजता के पक्ष में चित्रा मुद्गल की यह कहानी एक महत्वपूर्ण रचना है।

इसी प्रकार महादेवी वर्मा के कहानी संग्रह ' अतीत के चलचित्र', 'भाभी ', ' बिंदा ','सबियां ','बिट्टो',' बालिका मां ','अभागी स्त्री ' ' अलोपी' तथा ' लछमा' इत्यादि कहानियां नारी विमर्श का उत्तम उदाहरण है। भाभी कहानी में बाल विधवा और नारी जीवन

की समस्या को उभारा गया है। इस कहानी में ८ वर्ष की बालिका जिसकी उम्र गुड़ियों से खेलने की होती है वह घर संसार को संभालती है तथा विधवा होने के अभिशाप से हर रोज संघर्ष करती है। भाभी कहानी का एक छोटा सा प्रसंग जो हृदय को कंपित कर देता है देखिए -

"ऐसी दशा में उसने ८ वर्ष की बालिका को ही अपने संगीनहीन हृदय की सारी ममता सौंप दी, परंतु वह बालिका तो उसके संसार में प्रवेश करने में असमर्थ थी, इसी से उसने गुड्डे - गुड़ियों वाले संसार को अपनाया। इस प्रकार महादेवी की कहानियों में नारी के भिकारिन रूप का वर्णन, उसकी गरीबी का वर्णन, शोषण का वर्णन तथा नारी के उदार हृदयता का वर्णन कहानियों की विशेषता है। इनकी सबिया कहानी नारी के उदार हृदय, दया व करुणा से भरी कहानी है जो आंखों से आंसुओं की धारा को बाहर ला देती है।

निष्कर्ष: -

इस प्रकार समकालीन महिला कहानी में नारी विमर्श पर अध्ययन करने से प्राप्त होता है कि आज नारी आत्मनिर्भर होकर समाज के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रही है तथा नारी में वैचारिक चेतना उभर कर सामने आई है। वह स्वयं के लिए लड़ झगड़ रही है तथा स्वयं को सम्मानित करने के लिए संघर्ष कर रही है। आर्थिक दृष्टि से कुछ महिलाएं अपनी चेतना को प्राप्त नहीं कर सकती मगर शिक्षा ऐसा माध्यम है जिसके कारण वह खुद को पूरी तरह से आत्मनिर्भर बना सकती हैं।ऊपर कई कहानियों के प्रसंग में नारी के आत्मनिर्भरता की कहानी को हम पढ़ चुके हैं जिसमें हरी बिंदी, लक्षागृह,लड़कियां तथा अनेक ऐसी कहानियां जिसमें नारी के संघर्षों के साथ उनकी आत्मशक्ति व स्वाभिमान की विशेषता का विवरण देखने को मिलता है। इन कहानियों में नारी स्वतंत्रता, नारी शिक्षा, नारी पीड़ा को यथार्थता से दिखाया गया है। आज नारी घर परिवार के अलावा समाज के लिए रचनात्मक कार्य करना चाहती है। नारी के प्रश्नों को हल करने के लिए सरकारों द्वारा महिला आयोग और राज्य महिला आयोग स्थापित किए गए हैं। इसी प्रकार कई गैर सरकारी संगठन भी हैं जो नारी की समस्याओं का निवारण करते हैं किंतु फिर भी आज महिलाओं की समस्याएं बढती जा रही हैं। इन समस्याओं और नारी मुक्ति को लेकर नारी विमर्श पर अनेक रचनाएं लिखना यह समकालीन कहानियों के लेखक व लेखिकाओं की विशेषता रही है। जिनका मुख्य उद्देश्य पुरुष प्रधान समाज में नारी को समानता दिलाना है। आज नारी अपने हक के लिए दिनों- दिन आगे बढ़कर संघर्ष कर अपने हक को प्राप्त भी कर रही है। एक प्रकार से समकालीन कहानी में नारी विमर्श को प्रोत्साहन देने के कारण भी समाज में नारी के सम्मान में बढ़ोतरी हुई है।

संदर्भ :-

१) इंटरनेट
२)महिला:कहानी और कविता - प्रो.जयमोहन एम. एस - पृष्ठ ७,८,९,५२,५९,५७,५८,७१ - संस्करण २०११ - १५

३) अतीत के चलचित्र – महादेवी वर्मा– पृष्ठ २८ – संस्करण १९९७

पूनम रमेश प्रजापति